ISSN: 2347-2723 IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 2 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF LITERATURE

आचार्य रजनीश (ओशो) का शिक्षा दर्शन

डॉ (श्रीमती) दीप्ति गौड़
सहायक प्राध्यापक– बी.एड. एवं एम.एड. संकाय, बी.एस.ए. कॉलेज, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

सार –

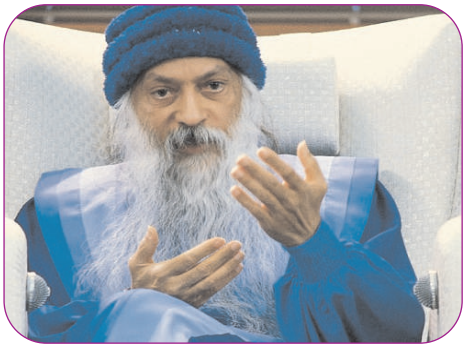

यह सत्य है कि दर्शन का कार्य निहित सत्य पर प्रकाश डालना है और निहित सत्य का ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता विकसित करने का कार्य शिक्षा का है। आचार्य रजनीश (ओशो) एक ऐसा व्यक्तित्व हैं जिन्होंने अपने शिक्षा दर्शन को धार्मिक विज्ञान का रूप देकर एक नवीन शिक्षा में 'धर्म और विज्ञान तथा ध्यान' को अति महत्ता प्रदान की। इन्होंने अपने शैक्षिक विचारों द्वारा बालक के जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु की अवस्था तक ध्यान के साथ स्तरानुसार व्यावहारिक विषयों पर बल दिया।

कुछ बुद्धिजीवियों ने समय–समय पर जीवन की व्याख्या तर्क, तथ्य और अनुभव के आधार पर करने का निरंतर प्रयास किया है जिसे दर्शन के रूप में जाना गया । यह सत्य है कि दर्शन का कार्य निहित सत्य पर प्रकाश डालना है, इस निहित सत्य को जान लेने पर व्यक्ति समस्या को हल कर लेता है। लेकिन समस्या में निहित सत्य का ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता शिक्षा से ही प्राप्त होती है।

जैसा कि स्पष्ट है कि दर्शन में विचारों की प्रधानता है और शिक्षा में कार्य प्रणाली की प्रधानता है अतः दर्शन साध्य है तो शिक्षा साधन है। यही कारण रहा कि दार्शनिको ने शिक्षा पर कुछ न कुछ दिशा निर्देश अवश्य ही प्रदान किए क्योंकि वे यह जानते थे कि यदि उनके अनुभव सिद्धान्त नही तो वे वही के वही निष्प्राण हो जायेंगे।

ऐसे शिक्षा– दार्शनिकों के मध्य ओशो जैसा व्यक्तित्व भी उभर कर आया जिसकी वैचारिक प्रणाली में पुस्तक व शास्त्र का स्थान गौण था उनका मानना था– ***''शास्त्र और सिद्धान्त पक्ष पैदा करते हैं और तब जीवन और उसकी समस्याओं के प्रति निष्पक्ष व निर्दोष दृष्टि नही रह जाती है।''***[1] अतः आचार्य रजनीश ने विश्व में व्याप्त खोखली परम्पराओं, संकीर्णताओं, परतंत्रताओं से ऊपर उठकर धार्मिक विज्ञान के माध्यम से एक नये जगत का सूत्रपात किया जिसमें वह धर्म को विज्ञान और विज्ञान को धर्म से मिलाकर ही पूर्ण मानते है क्योंकि वह दोनो ही स्तरों पर मनुष्य के विकास को महत्व देते है, जिसका कारण श्रेष्ठ मनुष्यता को जन्म मिलना है।

अपने इसी दृष्टिकोण को आधार बनाकर वे संसार में ऐसे मनुष्य को जन्म देना चाहते थे जो नैतिक और अध्यात्मिक स्तरों पर पूर्ण हो ऐसे नये मनुष्य को उन्होंने ***'जोरबा–दी बुद्धा'*** का नाम दिया जो भोग और योग के बीच में समन्वय स्थापित कर सकें, जो भौतिक जीवन का पूरा आनन्द मनाना जानता हो और गौतम बुद्ध की भांति मौन होकर ध्यान में भी उतर सकें।

आज विश्व की जो व्यवस्था शिक्षा के माध्यम से की जा रही है उसके सन्दर्भ में ओशो के कथन से स्पष्ट होता है कि ***''अगर मनुष्य गलत है तो निश्चित ही शिक्षा सम्यक नही है''***[2] इसके साथ ही वे शिक्षा को सम्यक बनाने का प्रयास करते है। धर्म और विज्ञान की सार्थकता को स्पष्ट करते हुये उन्होंने बालक के जन्म से पहले से लेकर बाल्यावास्था, किशोरावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था तक की शिक्षा का प्रावधान इस प्रकार से किया कि एक व्यक्ति अपनी जीविका से लेकर समाधि तक का सफर आसानी से तय कर सके और इन्ही सब उद्देश्यों को पूरा करने के लिये उन्होंने ध्यान द्वारा ही बच्चों को जन्म देना और प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए ध्यान विधियों पर विशेष महत्व दिया।

शिक्षा की इसी समझ को विकसित करने के लिये वे एक 'वर्ल्ड एकेडमी' की स्थापना चाहते है जहॉ पूरे विश्व में ध्यान, कला और रचनात्मक विज्ञान की एक समान शिक्षा का प्रावधान हो सकें। ओशो ने शिक्षा का जो प्रारूप तैयार किया है उसकी रूपरेखा इस प्रकार है– ''उन्होंने ***जन्म से पूर्व अभिभावकों की शिक्षा*** में जैनेटिक इंजीनियरिंग, ध्यान के प्रयोग पर बल तथा ***बाल शिक्षा*** में प्रारम्भिक वर्ष से माता–पिता, वातावरण, टी0वी0, निद्रा शिक्षा, यौन शिक्षा, शिक्षक, पुस्तकालय, भाषा सृजन तथा बच्चों और शिक्षको के लिये ध्यान की अनिवार्यता पर बल दिया। ***किशोरों की शिक्षा के लिये*** पीढ़ी अन्तर, वास्तविक शिक्षा, प्रमाणिक शिक्षा, यौन शिक्षा, फैशन, निजता, खेलकूद, रचनात्मकता, अहम विसर्जन, हास्यवृत्ति तथा ध्यान आदि बिन्दुओं को महत्व दिया।***युवाओं की शिक्षा के लिये*** उनकी समस्याओं से लेकर महानतम समायोजन (विज्ञान, कला व धर्म) तक की स्थिति को पाने में सहायता की। उन्होंने ***वृद्धावस्था की शिक्षा*** पर भी अपनी दृष्टि डाली जिसमें मृत्यु को सजगता से उत्सव मानने की कला तक की शिक्षा को स्पष्ट किया। इन सभी स्तरों पर ओशो ने ध्यान को अनिवार्य जगह दी।

उन्होंने विज्ञान,चिकित्सा विज्ञान, इतिहास, साहित्य, चित्रकारी, काव्य आदि विषयों के महत्व पर भी अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण रखा।

'नारी की मुक्ति और शक्ति', महत्वाकांक्षा का विष, शक्ति नियोजन आदि कई विषयों से सम्बन्धित विचारों को शिक्षा का जामा पहनाकर ही 21वी सदी का नयी धर्म विकसित किया। ओशो की शिक्षा का आधार जीवन से सम्बन्धित तीन कलाओं के विकास को पूर्ण करती प्रतीत होती है :–

1. पालन करने की कला

2. जीवन की कला
3. मृत्यु की कला

इन तीनों कलाओं का विकास कुछ इस प्रकार प्रस्तावित है जिसमे बालक के जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु तक एक जागरूकता की चेतना का विकास होता है। इसके अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण विषय, विज्ञान, भौतिकी, साहित्य आदि विषयों का आध्यात्मिक सम्बन्ध भी स्पष्ट किया जिससे इन मूल विषयों का जीवन में समुचित तथा सहयोग पूर्ण उपयोग किया जा सके।
इनके शिक्षा पूर्ण विचार शिक्षा जगत के मनीषी कार्यकर्ताओं, समाज सुधारकों, विद्यार्थियो व अभिभावकों सभी के लिये पर्याप्त महत्वपूर्ण है जिससे आज की शिक्षा को नया रूप प्रदान किया जा सकता है। ओशो ने कहा भी है ***''मेरी दृष्टि में चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ हो, हमे शिक्षा के ऐसे प्रयोग और ऐसी प्रक्रियाएं खोजनी पड़ेगी जिनमे एक एक व्यक्ति के भीतर का फूल खिल सके, शिक्षण संस्थायें फैक्ट्रियाँ नही होनी चाहिये। शिक्षण संस्थाएं प्रत्येक व्यक्ति की उसकी आत्म खोज मे सहयोग के स्थल होने चाहिये तो वह अपने आत्म की खोज में निकल जाये और अपने को पा लें कि वह कौन है और क्या हो सकता है।''***[3]

1. शिक्षा में क्रांति, पृ.स.–3 संस्करण 6, 2005।
2. वही पृ.स.–2।
3. वहीं पृ.स.–418

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.ओड, डॉ. लक्ष्मी के., शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, तृतीय संस्करण, 1990।
2.क्रांति बीज, पूना, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., संस्करण पॉचवा, दिसम्बर 2004।
3.जीवन रहस्य, पूना रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., संस्करण दूसरा, अप्रैल 2002।
4.नये समाज की खोज : पूना, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., संस्करण पॉचवा, दिसम्बर 2004।
5.राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय।
6.शिक्षा में क्रांति : पूना रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. पूना, संस्करण छठवाँ, दिसम्बर 2005।

पत्र – पत्रिकाएँ–

ओशों टाइम्स पूणे, – ताओ पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., जुलाई 1996, 97, 98, 2000।

डॉ (श्रीमती) दीप्ति गौड़
सहायक प्राध्यापक– बी.एड. एवं एम.एड. संकाय, बी.एस.ए. कॉलेज, मथुरा (उत्तर प्रदेश)